Rs. 5.00/-

LOOK N LEARN
CHILDREN'S JAIN MAGAZINE

10th May 2017 | Every Fortnight | English, Hindi & Gujarati

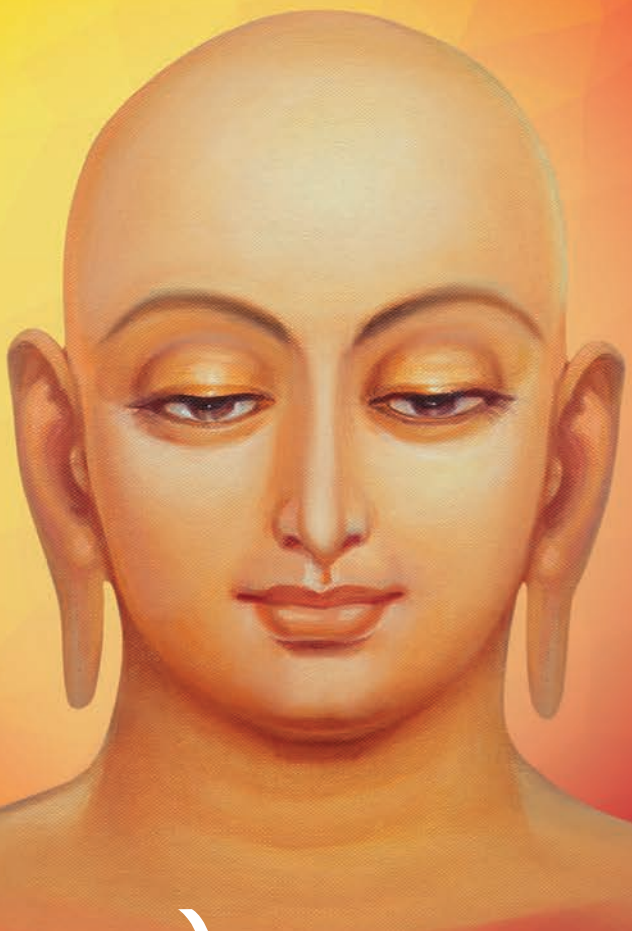

Shree Neminath Bhagwan

Year - 9, Vol: 9, Issue: 07, Date: 10.05.2017
Editor: Ashokbhai Sheth 20, Vanik Niwas, 1st floor, Cama Lane, Ghatkopar (West), Mumbai - 400 086.

अपने पूर्व भव में परमात्मा श्री नेमिनाथ, हस्तिनापुर के राजा श्रीसेन के बडे पुत्र राजकुमार शंख थे। एक बार कुछ मुसाफिरोंने राजा श्रीसेन से बिनती की और सहायता माँगी के हस्तिनापुर के मार्ग में और आसपास के गाँवो में कुछ लूटेरे बहुत परेशान कर रहे हैं, लूटपाट और खुन-खराबा बढ़ जाने से हस्तिनापुर में आने जाने पर डर लगता है। राजा श्रीसेन ने राजकुमार शंख को मुसाफिरों की मदद करने के लिए भेजा।

Parmatma Neminath in his earlier incarnation, was Shankh, the eldest son of king Shrishen of Hastinapur. One day the citizens informed the king that the highways approaching Hastinapur were being terrorized by bandits, robbery and murders became a daily routine for them. The citizens requested the king to protect the masses. The king deputed prince Shankh to go and punish the bandits.

Cheque or Draft:
Arham Yuva Group

Parasdham
Vallabh Baug Lane, Tilak Road,
Ghatkopar (E), Mumbai - 77

Subscription for 10 Years
India : Rs 1000/-
Abroad : Rs 5000/-

राजकुमार शंख एक कुशल राजनैतिक थे। उन्होंने लूटेरों को पकड़ने की योजना ऐसी बनाई कि अहिंसा से ही डाकूओं को पराजित किया। जब राजकुमार शंख लौट रहे थे तब उन्होंने किसी लड़की की चिखने की आवाज सुनी। उन्होंने देखा कि विद्याधर ने राजकुमारी यशोमती का अपहरण करके उन्हें बंदी बना लिया है। राजकुमारने यशोमती के प्राणों की रक्षा की और उनसे शादी करली।

Prince Shankh was an accomplished diplomat and strategist. He planned and conducted his campaign in such a way that he apprehended the leader of bandits without any bloodshed. While he was on his way back he heard the cry for help of a young princess abducted by Vidyadhar. Prince Shankh challenged Vidyadhar, defeated him and saved princess Yashomati and then married her.

कुछ समय पश्चात राजकुमार शंख महाराजा बने। एक बार एक ज्ञानी पुरुष से महाराज शंख ने पूछा कि जब भी वे रानी यशोमती को देखते हैं तो वह बाकी सब भूल जाते हैं, ऐसा क्युं? दीक्षा लेने का विचार भी शून्य हो जाता है। ऐसा क्यूँ? ज्ञानी महात्मा ने जवाब दिया कि महाराज आपका रानी यशोमती से जन्म-जन्मांतर का प्यार है। आप पिछले ६ जन्मों से पति-पत्नी हैं। यह साँतवा जन्म है।

जब महाराज शंख ने पूछा कि यह प्यार का बंधन कब टूटेगा तब ज्ञानी पुरुष ने जवाब दिया कि जब आपका ९ वाँ जन्म होगा तब आप नेमीनाथ के रुप में और रानी यशोमती, राजेमती के रुप में होंगी। यह बंधन तब टूटेगा जब आप २२ वें तीर्थंकर नेमीनाथ बनेंगे और राजेमती भी दीक्षा लेकर कर्म क्षय करके सिध्ध गति को प्राप्त करेंगी।

In due course Prince Sankh ascended the throne. Once a scholarly ascetic visited Hastinapur. King Shankh went for his darshan and asked him, "Why am I so deeply in love with Yashomati? The ascetic said, "You have both been together for many births. For last six lives you have been married to each other, this is the 7th birth , That is the reason for such intense and deep feelings ."

The king asked, "Will these ties ever break?"

The scholarly ascetic replied, "In your 9th incarnation you will be born as Neminath and she as Rajemati. In that birth you will be able to break this tie and become the 22nd Tirthankar. Rajemati will also follow you on the path of renunciation and attain salvation."

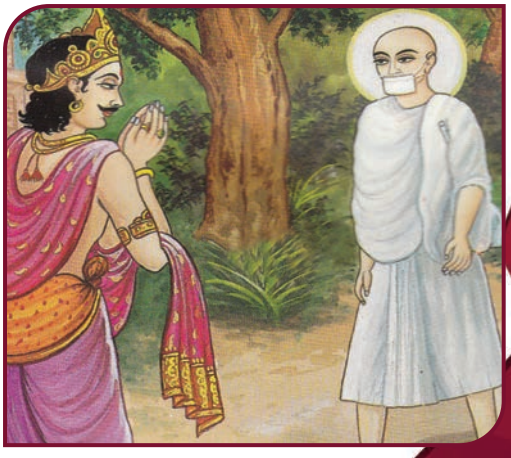

The Birth of Arishtanemi

यह सब जानकर शंख के मनमें सभी चीजों के प्रति मोह घटने लगा। उन्होंने अपने बेटे को सारा राजपाट सौंपकर दीक्षा ले ली और ध्यान साधना में लग गए। ध्यान साधना द्वारा शंख ने तीर्थंकर पद बाँध लिया। आयुष्य पूर्ण होने पर वे अपराजित के रुप में देव बने।

King Shankh eventually developed an intense feeling of detachment. He gave the kingdom to his son and became an ascetic. As a result of high spiritual practices and deep devotion for Jina he earned the Tirthankar-naam-gotra-karma and took birth in the Aparajit dimension of devtas as a celestial being.

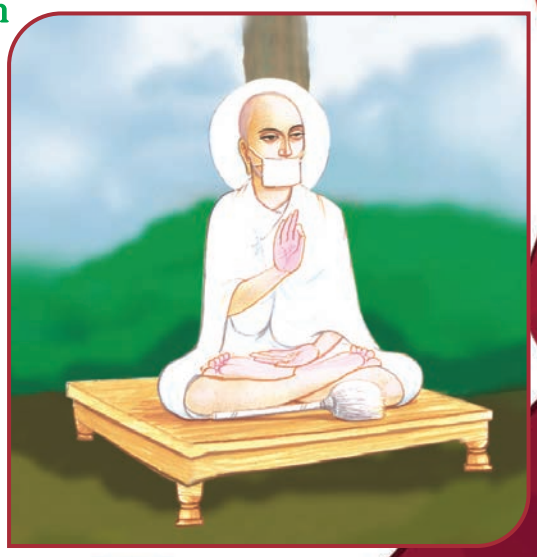

देव का आयुष्य समाप्त होने के बाद परमात्मा नेमिनाथ का जीव शौरीपुरी की रानी, शिवादेवी के गर्भ में उत्पन्न हुआ। रानी शिवादेवी सौरीपुर के राजा समुद्रविजय की पत्नी थी।

He then took birth as Parmatma Nemikumar into the womb of Queen Shivadevi, wife of King Samudravijay in Sauripur.

रानी शिवादेवी ने १४ स्वप्न देखे जो इस बात का प्रतिक थे की यह जीव तीर्थंकर बनने वाले हैं। श्रावण वद पाँचम को रानी शिवादेवी ने एक पुत्र रत्न को जन्म दिया और ५६ दिक्कुमारी जन्मोत्सव मनाने लगीं।

राजकुमार के नामकरण के समय राजा समुद्रविजय ने यह घोषित किया कि रानी शिवादेवी ने स्वप्न में रत्नों का चक्र देखा था इस कारण पुत्र का नाम होगा अरिष्टनेमि!

Queen Shivadevi dreamt 14 auspicious dreams. The dreams indicated that this being was to become a Tirthankar. On the 5th day of bright half of the month of Shravan, Queen Shiva Devi gave birth to a son.

During the naming ceremony the King conveyed that as the Queen had seen a disc with Arishta gems, the new born will be named Arishtanemi.

अरिष्टनेमि का बल

राजा समुद्रविजय के भाई वासुदेव थे। वासुदेव के दो पुत्र थे-बलराम और कृष्ण। एक दिन अरिष्टनेमि खेलते हुए वहाँ पहुंचे जहाँ सभी राज्य शस्त्र रखे थे। अरिष्टनेमि ने सुदर्शन चक्र उठाया और बड़ी ही आसानी से उसे घुमाने लगे। फिर सारंग धनुष को उठाया और पतली डंडी के समान उसे मोड दिया। इसके बाद नन्हें अरिष्टनेमि ने पंचज्ञ शंख उठाकर उसे इतनी जोर से बजाया कि आवाज से सारा नगर गूँज उठा। शंख की आवाज सुनकर श्री कृष्ण वहाँ पहुँचे और देखा कि अरिष्टनेमि शस्त्रों से बड़ी आसानी से खेल रहे थे। श्री कृष्ण जानते थे कि जिन शस्त्रों से नन्हा अरिष्टनेमि खेल रहा है वह साधारण व्यक्ति के लिए मुश्किल है। अपने छोटे भाई के यह असाधरण बल से श्री कृष्ण दंग रह गए।

The Power of Arishtanemi

King Samudravijay had a younger brother called king Vasudev. King Vasudev had 2 sons namely Shri Krishna and Shri Balram.

One day young Arishtanemi reached the room of auspicious weapons of Vasudev Shri Krishna. Seeing these divine weapons Arishtanemi first lifted the Sudarshan Chakra curiously and whirled it playfully. He then lifted a giant bow, Sarang, and bent it as if it was a thin stick. After this he lifted the Panchangna conch, and blew it hard. The piercing sound emanating from the great conch vibrated the whole town. On hearing this Shri Krishna rushed to the armoury. Seeing Arishtanemi playfully handling the heavy weapons, Vasudev Shri Krishna was astonished! He realised that it was unusual for a child to play with such auspicious huge weapons with ease.

श्री कृष्ण ने इस घटना के बाद यह जान लिया कि अरिष्टनेमि एक चक्रवर्ती बन सकते हैं। परंतु वे अरिष्टनेमि के निर्मोही स्वभाव से चिंतित थे। अरिष्टनेमि को संसार में रुची लेने के लिए श्री कृष्ण ने १ योजना बनाई। उन्होंने अरिष्टनेमि की शादी का प्रस्ताव रखा और राजकुमारी राजेमती से अरिष्टनेमि का विवाह निर्धारित हुआ।

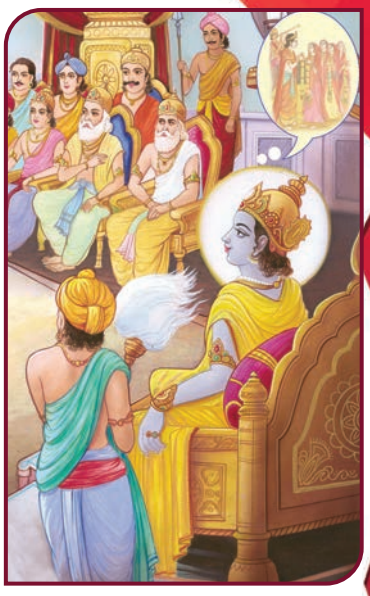

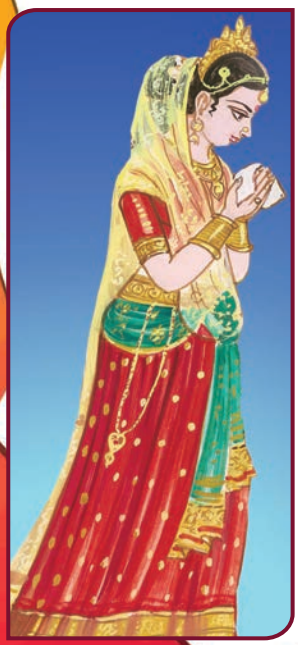

Shri Krishna was pleased that his young cousin was so strong, powerful and was capable of becoming a Chakravati. But was also worried about Aristanemi's nature of being detached towards worldly pleasure. Shri Krishna formulated a plan and coaxed Nemi to get married and finally Aristanemi's marriage was fixed with princess Rajemati.

५६ करोड़ यादव की बारात लेकर अरिष्टनेमि विवाह करने चले। लग्न मंडप पहुँचते हुए अरिष्टनेमि ने बहुत सारे पशुओं को बँधा हुआ देखा। वे सभी दुःख से चिल्ला रहे थे। अरिष्टनेमि ने अपने महावत से इसका कारण पूछा। उन्हें उत्तर मिला कि आज शादी के दौरान इन पशुओं से भोजन बनेगा।

56 crore Kings and Queens of Yadav family witnessed the marriage procession of Aristanemi. When the procession was approaching the destination, Nemikumar saw that there were large fenced areas and cages full of wailing and crying animals. Arishtanemi asked the mahout, as to why were those animals caged? The mahout replied softly that they were going to be killed for the feast of his marriage.

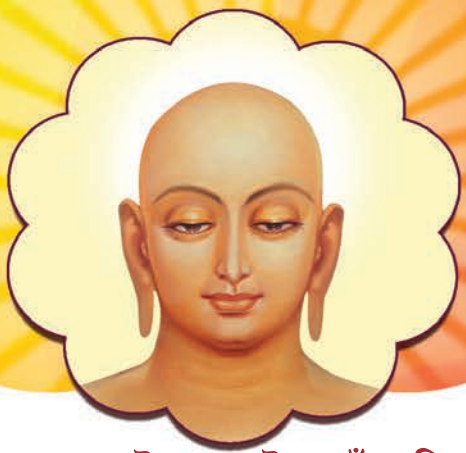

अरिष्टनेमि को इस बात से बहुत खेद पहुँचा कि, अरेरे। मेरी एक की खुशी के लिए इतने मासूम जानवरों की हत्या हुई तो उसका दोष मुझे लगेगा। यह क्रुरता मुझे मंजूर नहीं!

महावत ने आज्ञा का पालन किया और पशुओं को आजाद किया। सारे पशु हर्षोल्लास से भाग गए।

"जो दूसरों के दुःख की परवाह करते हैं, वही भविष्य में परमात्मा बनते हैं"

Arishtanemi was extremely sad that he was the cause behind the killing so many innocent lives.

Mahout followed the order and set the animals free. When the animals were released, they jumped in joy and ran away

"He who takes care for even the smallest being is our Parmatma."

पशु-पक्षी बंधनों में बंधे हुए तडप रहे थे और बंधन मुक्त होते ही प्रसन्न होकर उड़ानें भरने लगे। यह देखकर नेमिकुमार ने जाना कि हम सभी कर्म बंधनों से बँधे हुए हैं। सुख बंधन में नहीं, मुक्ति में है। उन्होंने दीक्षा लेने का निर्णय किया और वे तुरंत घर की ओर लौट गए। उधर दुल्हन के रुप में सजी राजेमती ने जैसे ही यह सुना कि कुमार बारात से वापस लौट गए, अब कभी नहीं आयेंगे, तो वह फूट-फूटकर रोने लगी और मूर्च्छित हो गई।

When the animals were caged they were restless, when they were freed they were happy. Seeing this Arishtanemi realised that happiness lies in freedom! Not in bondage so Nemikumar decided to take Diksha and asked the Mahavat to return back. Rajemati stood there as a bride eagerly waiting for Him... When she heard Nemikumar has returned back, she fainted in shock!

परमात्मा नेमिकुमार वर्षीदान देने के बाद उत्तरकुरा शिबिका में बैठकर गीरनार पहाडी पर पहुंचे और पंचमुष्टी लोच करके दिक्षा ग्रहण की।

After giving Varshidaan, Parmatma Nemi Kumar sat in a palanquin named Uttarkura and reached Girnar. He did Panchmusti loch and took Diksha.

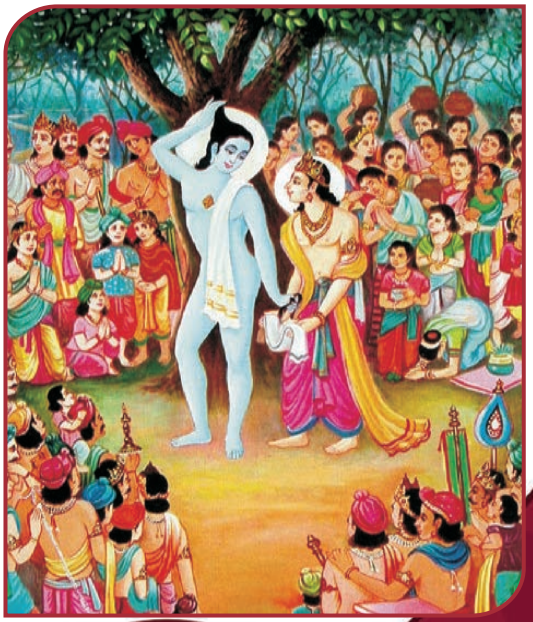

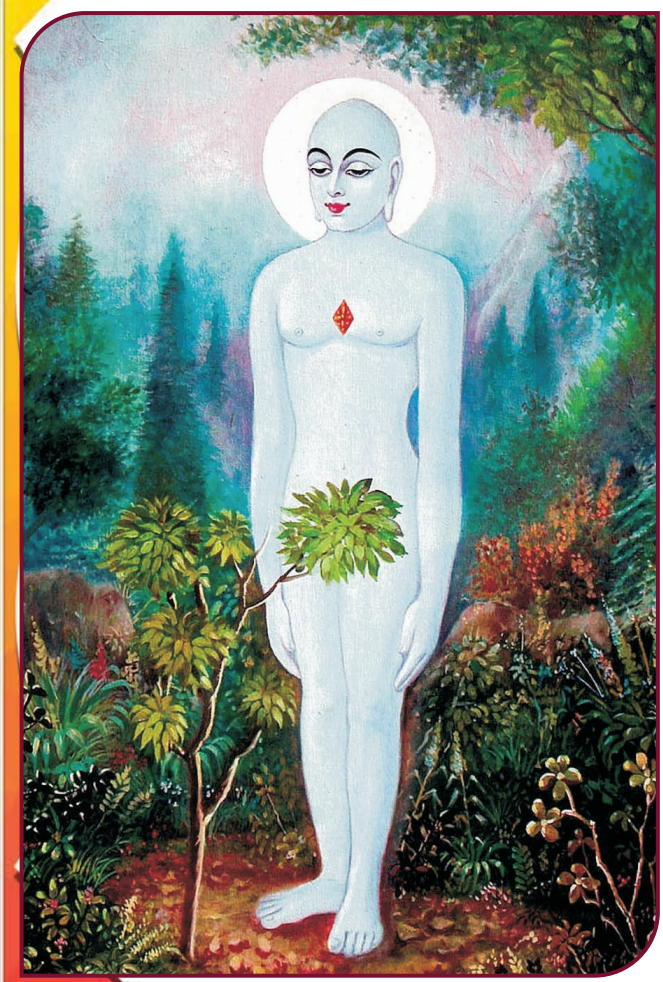

५४ दिनों तपस्या करने के बाद परमात्मा को गीरनार पर केवलज्ञान और केवलदर्शन की प्राप्ति हुई। उन्होंने तीर्थ की स्थापना की और २२ वे तीर्थंकर बने।

Parmatma spent 54 days in deep spiritual practices and he attained omniscience on the hills of Girnar. He became the 22nd Tirthankar Shree Neminath Bhagwan.

राजकुमारी राजेमती ने भी प्रभु अरिष्टनेमि से संयम व्रत ग्रहण किया और तप - ध्यान साधना कर अंत में भव मुक्त हुई।

When Rajemati recovered from melancholy she decided to follow the path taken by Parmatma Neminath and took Diksha. She practised penance and attained liberation.

परमात्मा नेमिनाथ ने भारतवर्ष में अहिंसा व करुणा का प्रचार किया। माँसाहार के विरुद्ध प्रचंड जन - जागृति पैदा की थी।

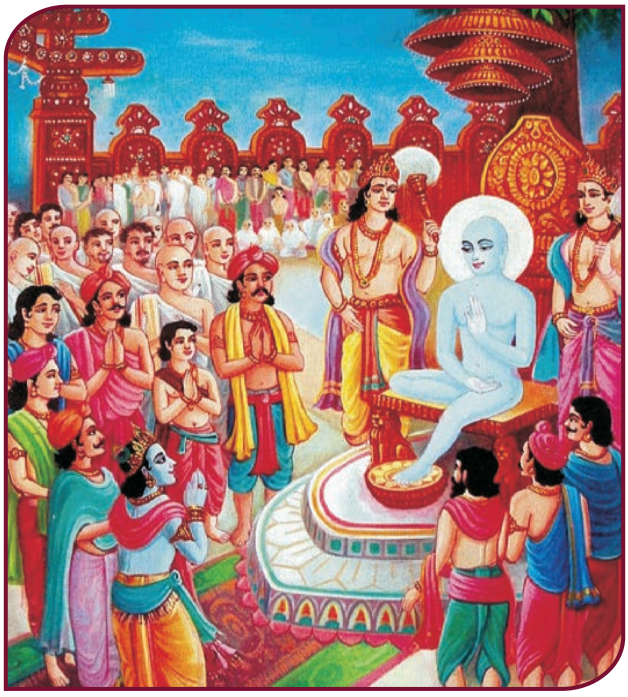

Parmatma Neminath Bhagwan spread the message of Compassion and Non-Violence along with the teachings of being vegetarian throughout India.

Registered with Registrar of Newspapers under RNI No. MAH MUL/2011/40056
Vol.: 9, Issue: 07, Date: 10.05.2017, Postal Registration No. MNE/171/2015-17.
Date of Posting / Date of Publication 10th & 25th of every month.
License to post without prepayment, WPP license No. MR/Tech/WPP-273/NE/2017.
Look N Learn - Posted at Mumbai patrika channel sorting office Mumbai -1

Neminath Bhagwan

Family name
Harivansh

Father
Samudravijay

Mother
Shivadevi

Source of Descent
Aparajit

Place of Birth
Sauripur

Age
1 Thousand years

Period of Practises
54 Days

Place of Nirvan
Girnar

Chief Disciple
Vardatta

Number of Disciples
11

Lanchan: Conch Shell

Publisher, Printer and Owner Ashok R. Sheth, Printed at : Accurate Graphics Pvt. Ltd.,
15-A, Samrat Mill Compound, L.B.S Marg, Vikhroli (W), Mumbai - 400 079.
Publish at Mumbai : 20, Vanik Nivas, Kama Lane, Ghatkopar (W), Mumbai - 86. Editor : Ashok R. Sheth